Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2021, VOL- 9/68

बाणभट्ट कृत कादम्बरी में वर्णित शुकनासोपदेश का साहित्यिक महत्व

डॉ. बीरपाल सिंह
विभागाध्यक्ष (संस्कृत), राजकीय महाविद्यालय गौण्डा, अलीगढ़

Paper Received On: 21 DEC 2021
Peer Reviewed On: 31 DEC 2021
Published On: 1 JAN 2022

Abstract

बाणभट्ट कृत कादम्बरी नामक रचना एक गद्यकाव्य होने पर भी पद्यकाव्य के जैसा आस्वादन कराती है। इस काव्य में महाश्वेता, कादम्बरी जैसी नायिकाओं का वर्णन है, जिसे पढ़कर साहित्य रसिकों का हृदय कमल की तरह खिल उठता है। बाणभट्ट की इस प्रकार की रचनाओं के कारण ही संस्कृत साहित्य जगत में उनका नाम शीर्ष स्थान पर लिया जाता है। कादम्बरी काव्य एक प्रेम कथा तो है ही, किन्तु इसका उत्तर पक्ष इससे बिल्कुल अलग, राजव्यवस्था की कूटनीतियों एवं लक्ष्मी के स्वभाव को जानने के साथ.साथ राजसभा में विद्यमान अपने ही बान्धवों से सावधान रहने हेतु भी जागरूक करता है।उन्होंने उस समय की राजनीतिक, सामाजिक उदारता और कुरीतियों का वर्णन कर चन्द्रापीड को सम्यक् आचरण का ज्ञान दिया था। बाण के काव्य में मित्र.प्रेम का भी वर्णन देखने को मिलता है। इस प्रकार बाण ने भूत, वर्तमान और भविष्य के लिए कादम्बरी गद्य काव्य रचकर विश्व साहित्य को अमूल्य सम्पत्ति दी है।

शब्दावलीः *भाषागत सौष्ठव, गद्यकाव्यकार, मंगलस्तुति, सूक्ति।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

अध्ययन का महत्वः

1. गद्य काव्यकारों में बाणभट्ट के स्थान के विषय में ज्ञान प्राप्त करना।
2. गद्यकाव्य में बाणभट्ट रचित कादम्बरी की विशेषता जानना।
3. गद्यकाव्य में वर्णित भाषागत सौष्ठव एवं वर्णन की विशेषता जानना।
4. बाणभट्टकालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों को समझना।

विवेचना : बाणभट्ट संस्कृत साहित्य के ऐसे कवि हैं, जिनका सम्पूर्ण परिचय उनकी रचनाओं में ही प्राप्त हो जाता है। कादम्बरी की भूमिका तथा हर्षचरित के प्रथम दो उच्छ्वासों में बाणभट्ट ने अपनी वंश परम्परा का विस्तारपूर्वक वर्णन किया है। तदनुसार ये वात्स्यायन गौत्र के ब्राह्मण थे। बाण बिहार के शाहबाद (आरा) जनपद के प्रीतिकूट के रहने वाले थे। इनके पिता का नाम चित्रभानु व माता का नाम राजदेवी था। माता का देहान्त बाण के

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शैशवावस्था में ही हो गया था। पिता ने ही माता.पिता दोनों की भूमिका का वात्सल्यपूर्वक निर्वाह कर इनका पालन.पोषण किया। बाण जब 14 वर्ष के थे तो उनके पिता का भी स्वर्गवास हो गया। पिता की मृत्यु के बाद बाण अपने मित्रों के साथ ही समय यापन करने लगे। इन्होंने किशोरावस्था में देशभ्रमण कर लिया और फिर वापस अपने जन्मस्थान पर आ गए थे। बाण की उच्चकोटिक विद्वत्ता से कुण्ठित होकर, कुछ अन्य ईर्ष्यालू विद्वानों ने राजा हर्षवर्धन से उनकी शिकायत की जिसके कारण उन्हें राजा हर्षवर्धन ने राजसभा में बुलाकर 'अयमसो भुजङ्गः' कहकर अपमानित किया। बाद में बाण ने धैर्यपूर्वक अपनी स्थिति स्पष्ट कर हर्षवर्धन का भ्रम दूर किया। माना जाता है कि हर्षवर्धन ने बाणभट्ट की विद्वत्ता से प्रसन्न
होकर उन्हें राज्याश्रय प्रदान किया। इसी क्रम में बाणभट्ट ने प्रीतिकटू आकर 'हर्षचरित' की रचना की और राजा के चरित्र को काव्य के माध्यम से अमर कर दिया।

गद्यकाव्यकार बाण सम्राट हर्षवर्धन की राजसभा के सभापण्डित थे, अतः उनके समकालिक माने गए हैं। इस आधार पर इनका समय 606 से 645 ई. तक माना जा सकता है। राजा हर्षवर्धन ने इस समय सीमा में उत्तरी भारत में शासन किया था। चीनी यात्री ह्वेनसांग ने अपने भारत भ्रमण के लेख में भी हर्षवर्धन और बाणभट्ट का वर्णन किया है। ह्वेनसांग भारत में 629 से 645 ई. के बीच आए थे। अतः इन सब तथ्यों को देखते हुए बाणभट्ट का समय 620 ई. के समीप का माना जा सकता है। बाणभट्ट ने अपने लेखों में अपने पूर्ववर्ती लेखकों और कृतियों का भी वर्णन किया है जैसे – भास, वासवदत्ता, कालिदास, बृहत्कथा इत्यादि। भोजराज ने भी बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में सरस्वतीव्याकरण में कहकर उन्हें अपने पूर्व का सिद्ध किया है। इन प्रमाणों के आधार पर इन्हें सप्तम शताब्दी के पूर्वार्ध का माना जा सकता है।

बाण भट्ट की रचनायें : बाण ने संस्कृत साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कृतियों की रचना कर संस्कृत साहित्य ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण विश्व के काव्यकारों में भी विशेष यश प्राप्त कियाहै। बाणभट्ट की रचनाएं निम्नलिखित हैं –1. हर्षचरित (आख्यायिका), 2. कादम्बरी (कथा), 3. चण्डीशतकम् (श्लोकपूर्ण स्तुति) 4. मुकुटताडितक (नाटक), 5. पार्वती.परिणय (नाटक)।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

कादम्बरी में वर्णित शुकनाशोपदेश का साहित्यिक योगदान : कादम्बरी महाकवि बाणभट्ट की संस्कृत गद्य.साहित्य के लिये अमर कीर्ति है। कादम्बरी में बाण के साहित्य का चरमोत्कर्ष प्राप्त होता है। यह कथा.जगत् की सर्वोत्कृष्ट कृति मानी जाती है। बाणभट्ट ने कादम्बरी के पूर्वार्द्ध में मंगलाचरण और मुख्यकथा का वर्णन किया है। उन्होंने 20 पद्यों में मंगलस्तुति, गुरु तथा वंश परिचय, सज्जन.स्तुति एवं दुर्जन.निन्दा का उल्लेख करते हुए अपनी कथा सकुशल प्रस्तुत की है। यह कहा जाता है कि बाणभट्ट की मौलिक कृति केवल पूर्वार्ध ही है, जो सम्पूर्ण कादम्बरी का दो तिहाई भाग है। उत्तरार्ध भाग की रचना उनके पुत्र भूषणभट्ट ने उनकी मृत्यु के बाद की है। कादम्बरी के विषय में किसी कवि ने कहा है – **''कादम्बरी रस ज्ञानामाहारोपि न रोचते।''**

शुकनासापे देश कादम्बरी का ही एक भाग है किन्तु इसका अपना स्वतन्त्र महत्त्व हंै। यह एक उपदेशात्मक ग्रन्थ है जिसमें बाणभट्ट ने जीवन दर्शन के प्रत्येक दृष्टिकोण को वर्णित किया है। तारापीड नामक राजा का अनुभवी व नीति.निपुण शुकनास नामक मन्त्री राजकुमार चन्द्रापीड (तारापीड के पुत्र) को राज्याभिषेक से पूर्व वात्सल्य भाव से उपदेश देकर उसे रूप, यौवन, प्रभुता तथा ऐश्वर्य जैसे दुर्गुणों से सावधान रहने की शिक्षा प्रदान करता है। शुकनासोपदेश में इसी उपदेश का वर्णन है।

राजकुमार के राज्याभिषेक से पूर्व मन्त्री शुकनास के द्वारा दिए गये उपदेश जैसे अनर्थ परम्परा, युवावस्था का प्रभाव, गुरु का महत्त्व, लक्ष्मी की प्रकृति, राजाओं के प्रति लक्ष्मी के आचरण तथा उसका प्रभाव, कूटनीति तथा राजा की प्रकृति इत्यादि शुकनासोपदेश का विषय हैं। शुकनास राजकुमार को उपदेश देते हुए कहते हैं कि इन दुर्गुणों में से एक भी आपका अनर्थ कर सकता है, फिर सबका होना तो परम नाश का कारण होगा ही। युवावस्था के आने पर शास्त्रज्ञान से पूर्ण व्यक्ति की भी बुद्धि मलिन हो जाती है। इस अवस्था में आकृष्ट करने वाली शक्तियाँ अत्यधिक प्रबल होती हैं, जो आपको अन्त में (युवावस्था के अन्त में) अत्यधिक दुःख देंगी। विषयों की अतीव आसक्ति मानव को कुमार्ग पर ले जाकर उसका नाश कर देती है।

गुरु महिमा : जिस प्रकार कर्ण गुहा में विद्यमान जल निर्मल होने पर भी वेदना उत्पन्न करता है, ठीक उसी प्रकार दुर्जनों को पावन निर्मल गुरुजनों

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

के निष्कपट व कल्याणप्रद उपदेश वेदनापूर्ण लगते हैं। कहीं सत्पुरुषों को गुरु वाणी ऐसी लगती है, मानो शङ्खों का आभूषण गज के मुख में सुशोभित हो गया है। गुरु का ज्ञान मनुष्यों को ऐसे प्रकाशित करता है जैसे प्रारम्भ की शशि सघन अन्धकार को दूर कर देती है। गुरूपदेश सभी प्रकार की बुराई को समाप्त कर प्रगति का मार्ग है। बालों को सफेद किए बिना रोग से रहित वार्द्धक्य है।

गुरूपदेश की महिमा राजाओं के लिये अधिक महत्त्वपूर्ण है क्योंकि राजाओं को उपदेश देने वाले कम ही होते हैं। राजा लोग उपदेश कम ही सुनते हैं और यदि सुन भी लें तो गज की तरह एक कान से सुनकर दूसरे कान से निकाल देते हैं। जिस कारण गुरु दुःखित हो जाते हैं और राजा का भी शीघ्र ही पतन हो जाता है।

लक्ष्मी का स्वभावः शुकनासोपदेश में लक्ष्मी की प्रकृति के विषय में बहुत अच्छा वर्णन प्राप्त होता है। यहाँ पर मन्त्री शुकनास कहते हैं कि – अपना परिचय न रखने वाली इस संसार में ये लक्ष्मी सबसे नीच है क्योंकि यदि ये आपको मिल जाती है, तो भी बड़ी कठिनाई से ही आपके पास रहती है। योद्धा एवं हाथियों से संरक्षित करने पर भी ये भाग जाती है।

यह भ्रमणशील है एवं यह शक्तिशाली राजा को भी छोड़कर चली जाती है। जिस प्रकार लता वृक्ष का आलिङ्गन करती है उसी प्रकार यह नीच जनों का आलिङ्गन करती है। यह बुलबुलों की भाँति चंचल है। यह क्षणिक शोभा प्रदान करने वाली है। इस प्रकार कई बातें शुकनासोपदेश में लक्ष्मी के बारे में वर्णित हैं।

‘‘इयं लक्ष्मीः इन्द्रियाणि विषयाभिमुखानि विधाय चित्तं कलुषीकरोति। शनैः शनैः सच्चरितानि नाशयति। लक्ष्म्याः संसर्गेण पुरुषाणां सदसद्विवेको विनश्यति। सर्वविधधर्माचरणानां विनाशश्च भवति। कामादिविकाराणां प्राबल्येन सर्वाः गुणाः अपयान्ति। विविधनिन्दिताचरणजन्यलोकापवादाः जायन्ते। अपि च चंचलस्वभावा इयं नैकत्र स्थिरतया वासं करोति। आरब्धयौवनेन चन्द्रापीडेन यौवराज्यप्राप्ते अस्मिन् अवसरे एतत् सर्वं चिन्तनीयम् इत्याशयः।’’

राजाओं के प्रति लक्ष्मी का आचरण : भाग्यवश अपनाए गए राजा विलासी व दुराचारी बन जाते हैं तथा क्रोधादि बुराइयों के शिकार हो जाते हैं।

षड़यन्त्र कारियों की कूटनीति के प्रति राजा : दुष्ट लोग स्वार्थ साधने के लिए राजा की सभा में गृद्ध पक्षी की तरह राजसभा में बक बनकर बठै रहते हैं आरै अज्ञानी राजा भी उनकी प्रशंसा को अपना आदर समझता है जो उसके पतन का कारण बनते हैं। शुकनास अपने उपदेश के अन्त में कहता है कि हे राजकुमार! यह शासन.व्यवस्था एवं यौवन अवस्था आपके बुद्धि.विवेक को न हर ले, ऐसा प्रयास करें, जिससे आपकी समस्त प्रजा सदैव आपका आदर करती रहे। चन्द्रापीड शुकनास के उपदेश से मानो फिर से निर्मल और कान्तियुक्त सा हो गया।

इस प्रकार शुकनास द्वारा दिए गए चन्द्रापीड को उपदेश में कवि की प्रतिभा का चरमोत्कर्ष दिखाई देता है। इसमें बाणभट्ट का शब्द चातुर्य प्रशंसनीय है।

तत्कालीन समाज व्यवस्थाः बाणभट्ट की इस रचना में समाज और साहित्य का अटूट सम्बन्ध दिखाया गया है। सफल कवि बहुत से विषयों को अपने अनुसार परिवर्तित कर देता है। बाण की इस रचना से ज्ञात होता है कि तात्कालिक समाज में वर्णव्यवस्था तो थी, किन्तु जातीय कट्टरता नहीं थी। चाण्डालकन्या को भी बिना किसी बाधा के राजसभा में प्रवेश की अनुमति मिलना इसका प्रमाण माना जा सकता है। लोगों में परस्पर स्नेह सम्बन्ध था। ब्राह्मण अध्ययन.अध्यापन का कार्य करते थे। राज्य.शासन एवं सुरक्षा का कार्य क्षत्रियों पर था। वैश्य व्यापार करते थे। शूद्र सेवा का कार्य करते थे। शिक्षा की व्यवस्था सम्यक् रूप से थी। धनी लोगों के लिये स्वतन्त्र शिक्षा भी दी जाती थी। उस समय द्यूतक्रीडा, नृत्य और चित्रकला का प्रचलन था। लिङ्गभेद अधिक नहीं था, जिस कारण लड़कियाँ अपना स्वयंवर कर सकती थीं। महिलाओं का आदर होता था। ज्ञानी व ज्येष्ठ लोगों का पूरा सम्मान होता था।

शुकनासोपदेश के अनुसार पिता का सन्देश आते ही चन्द्रापीड का महल में लौटना, पिता के सम्मुख पृथ्वीतल पर ही बैठना इत्यादि ज्येष्ठों के प्रति आदर को प्रदर्शित करता है। यह सत्य है कि उस समय सती.प्रथा थी किन्तु उसकी निन्दा और विरोध आरम्भ हो गया था। मैत्री को विशेष महत्त्व दिया जाता था। उस समय धर्म परिवर्तन भी होते थे। धर्म के प्रति कोई कठोर नियम नहीं थे। स्वास्थ्य पर लोग ध्यान देते थे।

संस्कार परम्परा हुआ करती थी। लोग उनका आदर भी करते थे। कुछ सीमा तक अन्धविश्वास भी लोगों में था। मूर्ति.पूजन, मूर्ति स्थापना जैसे विषय तब के समाज में देखने को मिलते हैं। किन्तु लोगों को धर्म के नाम पर ठगा नहीं जाता था। समाज में शान्ति एवं सुव्यवस्था थी।

तत्कालीन राजनैतिक व्यवस्थाः यह सत्य है जहाँ राजा हो और लक्ष्मी का वास हो, उस राज्य में राजनीति होना स्वाभाविक है क्योंकि बिना राजनीति के राजतन्त्र का चलना सम्भव नहीं है। बाण ने भी अपनी रचना में राजनीतिक स्थिति का वर्णन किया है। उस समय साम्राज्यवाद ही प्रचलन में था। साम्राज्यवाद के अनुसार राजा के पास असीमित अधिकार होते थे। उसकी मन्त्रिपरिषद् हुआ करती थी, जिसमें अनेक मन्त्री एवं एक प्रधान अमात्य या प्रधान परामर्शक होता था। मन्त्रिपरिषद् की नियुक्ति में शिक्षा. दीक्षा और कौशल के साथ.साथ कुल भी देखा जाता था। तब राजा अपनी सीमाओं का विकास करने में भरोसा करते थे। इस कारण से भारत की भौगोलिक सीमायें दूर.दूर तक फैली हुईं थीं। विभिन्न देशों से भारत के प्रगाढ़ सम्बन्ध थे। उपहारों का आदान.प्रदान भी हुआ करता था। उस समय चार प्रकार की सेनाओं का प्रचलन था। शासन व्यवस्था दृढ़ थी। लोग सुख. शान्ति से जीवन.यापन करते थे। प्रजा की रक्षा व पालन का कार्य राजा पर होता था। प्रजा भी अपने राजपरिवार का पूरा आदर.सम्मान करती थी।

शुकनासोपदेश में वर्णित प्रमुख सूक्तियाँ :

1. अपरिणामोपशमो दारुणो लक्ष्मीमदः।
2. विषमो विषयविषास्वादमोहः।
3. गुरूपदेशः पुरुषाणाम् अखिलमलप्रक्षालनक्षमम् अजलं स्नानम्।
4. राज्ञां विरला हि उपदेष्टारः।
5. अहङ्कार.दाहज्वर.मूर्च्छान्धकारिता विह्वला राजप्रकृतिः।
6. जन्मान्तरकृतम् हि कर्मफलमुपनयति पुरुषस्येह जन्मनि।
7. सुभाषितं हारि विशत्यधो गलान्न दुर्जनस्यार्करिपोरिवामृतम्।
8. चन्दनप्रभवो न दहति किमनलः ?
9. तृष्णाविषमूर्च्छिताः कनकमयमिव सर्वं पश्यन्ति।
10. खलीकरोति लक्ष्मीरिति।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

संदर्भः

शुकनासोपदेशः– डा. राजेश्वर प्रसाद मिश्र,अक्षयवट प्रकाशन, इलाहाबाद।
कादम्बरी (कथामखु.प्रकरणम्)– तारिणीश झा, रामनारायणलाल इलाहाबाद।
संस्कृत साहित्य का इतिहास– डॉ. उमाशंकर शर्मा 'ऋषि',चौखम्बा भारती प्रकाशन,वाराणसी।
कादम्बरी – भावबोधिनी व्याख्या सहित, डॉ. जयशंकर लाल त्रिपाठी, कृष्णदास अकादमी, वाराणसी, 1993।
कादम्बरी – महोपाध्याय भानुचन्द्रसिद्धचन्द्र कृत टीका सहित, सं. काशीनाथ पाण्डुरङ्गपरब्, निर्णयसागर प्रेस, बॉम्बे, 1849 (शकाब्द)।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies